गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा भारत-नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Vol. : 13, Issue : 2 | May : 2026

Special Issue Editor :
Prof. Dinesh Soni

Executive Editor :
Dr. Varsha Rani

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-13, अंक-2 मई 2026 (विशेषांक) ISSN : 2348-5639

संपादक/प्रकाशक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

कार्यकारी संपादक :
डॉ. वर्षा रानी

विशेषांक संपादक :
प्रो. दिनेश सोनी

सह-संपादक :
डॉ. लता एस. पाटिल,
डॉ. सुलक्षणा अहलावत

प्रबंध संपादक :
डॉ. मुकेश कुमार 'ऋषिवर्मा'

अक्षर संयोजन :
मो. सलीम

कानूनी सलाहकार :
डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
अजीत सिहाग, एडवोकेट

अंतर्राष्ट्रीय सम्पादक मंडल :

डॉ. निशीथ गौड, आगरा

डॉ. उषा रानी, शिमला

डॉ. गोविन्द सोनी, श्रीगंगानगर

डॉ. सुषमा रानी, जीन्द

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर

डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी, नेपाल

श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन

डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णत: अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्रा भिवानी (हरियाणा) न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 600/- रु. एक प्रिंट प्रति वार्षिक 2000/- रु.

ISSN : 2348-5639

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by :		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

18.	समकालीन साहित्य में दलित स्त्री : दोहरी पीड़ा का दस्तावेज	अम्बरा देवी	92–96
19.	भारतीय ज्ञान परंपरा और जीवन प्रबंधन	मनप्रीत कौर	97–102
20.	ईरान–अमेरिका संघर्ष : वर्तमान परिदृश्य का एक समालोचनात्मक अध्ययन	हेती सिंह	103–109
21.	मानसिक रोगों के योगों का अध्ययन (ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में)	Vishnu Kant Sharma, Dr. Om Prakash Sharma	110-114
22.	स्व-प्रबंधन : भारतीय दर्शन और आधुनिक नेतृत्व	डॉ. प्रीति श्रीवास्तव	115–121
23.	जलवायु परिवर्तन की राजनीति के लैंगिक आयाम : एक समालोचनात्मक अध्ययन	श्री जयललिता	122–129
24.	आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा पद्धति का महत्व	Jaishri Gupta	130-133
25.	भक्ति काव्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा	सुशीला, डॉ. शिवचरण शर्मा	134–137
26.	गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का वर्तमान शिक्षा में महत्व	प्रो. डॉ. केशव क्षीरसागर	138–144
27.	त्योहारों और परंपराओं का शैक्षिक महत्व	कुमारी मौसम	145–147
28.	भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति	डॉ० ऊषा रानी	148–153
29.	भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान	डॉ. रविता पाठक	154–160
30.	मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' में वर्णित भारतीय संस्कृति	डॉ. उषाबेन परमार	161–165
31.	भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान व गणित का योगदान	डॉ. प्रीति शर्मा	166–170
32.	भारतीय ज्ञान परंपरा और हिन्दी साहित्य	अविनाश कुमार	171–175
33.	प्राचीन भारत में जाति व्यवस्था का उद्भव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	प्रिन्स कुमार	176–183
34.	20वीं सदी के प्रारंभिक भारत में नारी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	अनामिका आनंद	184–192
35.	भारतीय ज्ञान परम्परा साहित्य शिक्षा और संस्कृति : एक समन्वित अध्ययन	राठौड़ श्रावण	193–199
36.	संस्कार और भारतीय जीवन शैली	आशुतोष धर दुबे, डॉ. सुनिता सारस्वत	200–203
37.	भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी : नारी विमर्श के संदर्भ में एक विश्लेषण	Mrs. Harsha Sahu	204-214

गिरधारीलाल घासीराम शोध पीठ द्वारा भारत, नेपाल से प्रकाशित ISSN : 2348-5639
SHODH SAMALOCHAN
AN INTERNATIONAL PEER-REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

ईरान–अमेरिका संघर्ष : वर्तमान परिदृश्य का एक समालोचनात्मक अध्ययन

हेती सिंह
जूनियर रिसर्च फेलो, राजनीति विज्ञान विभाग
रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)

सार (Abstract) :

ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संघर्ष आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सबसे जटिल, दीर्घकालिक और बहुआयामी विवादों में से एक है, जिसकी जड़ें ऐतिहासिक, वैचारिक, सामरिक और आर्थिक कारकों में निहित मानी जाती हैं। यह शोध पत्र 2024द्2026 के समकालीन परिप्रेक्ष्य में इस संघर्ष की प्रकृति, कारणों और इसके क्षेत्रीय एवं वैश्विक प्रभावों का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से ईरान के परमाणु कार्यक्रम, अमेरिका द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों, तथा मध्य पूर्व में चल रहे प्रॉक्सी युद्धों की भूमिका को केंद्र में रखकर अध्ययन करता है। संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA) के कमजोर पड़ने तथा अमेरिका के एकतरफा नीतिगत निर्णयों ने दोनों देशों के बीच अविश्वास को और अधिक गहरा कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप न केवल द्विपक्षीय संबंध तनावपूर्ण बने हुए हैं, बल्कि पूरे मध्य पूर्व क्षेत्र में अस्थिरता और संघर्ष की स्थिति भी बनी हुई है।

यह शोध पत्र यथार्थवाद, उदारवाद और संरचनावाद जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांतों के माध्यम से इस संघर्ष की व्याख्या करता है। यथार्थवादी दृष्टिकोण इसे शक्ति और सुरक्षा की प्रतिस्पर्धा के रूप में देखता है, जबकि उदारवादी दृष्टिकोण कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के माध्यम से समाधान की संभावनाओं पर बल देता है। वहीं संरचनावादी दृष्टिकोण इस संघर्ष को वैचारिक और पहचान–आधारित टकराव के रूप में प्रस्तुत करता है।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि ईरान–अमेरिका संघर्ष केवल द्विपक्षीय मुद्दा नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति संतुलन, ऊर्जा सुरक्षा, और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संरचना को भी प्रभावित करता है। चीन और रूस जैसे देशों की बढ़ती भूमिका ने इस संघर्ष को और अधिक जटिल बना दिया है।

अंततः, शोध पत्र यह निष्कर्ष देता है कि स्थायी शांति और स्थिरता के लिए बहुपक्षीय कूटनीति, विश्वास निर्माण उपाय, और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को प्राथमिकता देना आवश्यक है। साथ ही, परमाणु मुद्दे के समाधान हेतु प्रभावी और समावेशी वार्ता तंत्र की पुर्नस्थापना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द – परमाणु राजनीति, संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA), आर्थिक प्रतिबंध, प्रॉक्सी युद्ध, मध्य पूर्व राजनीति, भू–राजनीति, शक्ति संतुलन, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा, वैश्विक शक्ति संरचना।

परिचय (Introduction)

ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंध समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सबसे जटिल और संवेदनशील विषयों में से एक हैं। यह संबंध केवल दो राष्ट्रों के बीच कूटनीतिक तनाव तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ऐतिहासिक घटनाएँ, वैचारिक मतभेद, सामरिक हित और वैश्विक शक्ति संतुलन जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद से दोनों देशों के संबंधों में निरंतर अविश्वास और टकराव की स्थिति बनी हुई है, जिसने इस संघर्ष को दीर्घकालिक रूप प्रदान किया है।[1]

ईरान–अमेरिका संघर्ष की जड़ें 1953 के उस तख्तापलट तक जाती हैं, जिसमें अमेरिका की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसके पश्चात 1979 की क्रांति और अमेरिकी दूतावास बंधक संकट ने दोनों देशों के संबंधों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया। समय के साथ यह संघर्ष केवल द्विपक्षीय मुद्दा नहीं रहा, बल्कि यह मध्य पूर्व की राजनीति, वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय शांति के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गया है।[2]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य (2024–2026) में यह संघर्ष नए आयाम ग्रहण कर चुका है। ईरान के परमाणु कार्यक्रम, अमेरिका द्वारा लगाए गए कठोर आर्थिक प्रतिबंध, और मध्य पूर्व में चल रहे प्रॉक्सी युद्ध इस तनाव के प्रमुख कारक हैं। संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA), जिसे 2015 में एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक उपलब्धि माना गया था, अब लगभग निष्क्रिय हो चुकी है, जिससे दोनों देशों के बीच अविश्वास और गहरा गया है।[3]

इसके अतिरिक्त, इजराइल–ईरान तनाव, रेड सी क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियाँ, और अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमलों ने इस संघर्ष को और अधिक जटिल बना दिया है। यह स्थिति न केवल क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित कर रही है, बल्कि वैश्विक शक्ति संरचना में भी परिवर्तन का संकेत दे रही है, जहाँ चीन और रूस जैसे देश भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इस प्रकार, ईरान–अमेरिका संघर्ष को समझने के लिए केवल घटनाओं का वर्णन पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके पीछे निहित राजनीतिक, वैचारिक और संरचनात्मक कारकों का समालोचनात्मक विश्लेषण आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी दिशा में एक प्रयास है, जिसमें वर्तमान परिदृश्य के संदर्भ में इस संघर्ष के विभिन्न आयामों का गहन अध्ययन किया गया है।[4]

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

ईरान–अमेरिका संबंधों पर विद्यमान साहित्य विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों और विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से इस जटिल संघर्ष को समझाने का प्रयास करता है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख सिद्धांत 'यथार्थवाद, उदारवाद और संरचनावाद' इस विषय की व्याख्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यथार्थवादी विद्वान, जैसे Kenneth Waltz (1979), ईरान–अमेरिका संघर्ष को शक्ति संतुलन (Balance of Power) और सुरक्षा दुविधा (Security Dilemma) के संदर्भ में देखते हैं। उनके अनुसार, दोनों देशों के बीच अविश्वास और सैन्य क्षमता की प्रतिस्पर्धा इस संघर्ष को बनाए रखती है। John Mearsheimer (2001) का तर्क है कि क्षेत्रीय प्रभुत्व (Regional Hegemony) की आकांक्षा और रणनीतिक हित इस टकराव के मूल में हैं, विशेषकर मध्य पूर्व जैसे संवेदनशील क्षेत्र में।

उदारवादी दृष्टिकोण इस संघर्ष में कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और सहयोग की संभावनाओं पर बल

देता है। 2015 का संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA) इस दृष्टिकोण का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसे कई विद्वानों ने तनाव कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना है। हालांकि, 2018 में अमेरिका के इस समझौते से हटने के बाद, उदारवादी तर्कों की सीमाएँ भी स्पष्ट हो गईं, जिससे यह संकेत मिलता है कि संस्थागत सहयोग राजनीतिक इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है।

संरचनावादी विद्वान, जैसे Alexander Wendt (1999), इस संघर्ष को वैचारिक और पहचान–आधारित दृष्टिकोण से समझते हैं। उनके अनुसार, ईरान की इस्लामी पहचान और अमेरिका की पश्चिमी उदारवादी पहचान के बीच टकराव ने पारस्परिक अविश्वास को गहरा किया है। इस दृष्टिकोण में यह भी महत्वपूर्ण है कि दोनों देशों की नीतियाँ केवल भौतिक हितों से नहीं, बल्कि विचारधाराओं और ऐतिहासिक अनुभवों से भी प्रभावित होती हैं।

हाल के अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि ईरान–अमेरिका संघर्ष अब केवल द्विपक्षीय नहीं रहा, बल्कि इसमें वैश्विक शक्ति संरचना के परिवर्तन का भी प्रभाव दिखाई देता है। चीन और रूस जैसे देशों के साथ ईरान के बढ़ते संबंध, तथा अमेरिका की क्षेत्रीय रणनीतियाँ इस संघर्ष को बहुध्रुवीय (Multipolar) संदर्भ में स्थापित करती हैं।

इसके अतिरिक्त, समकालीन शोध प्रॉक्सी युद्धों, साइबर हमलों और आर्थिक प्रतिबंधों को इस संघर्ष के नए आयामों के रूप में प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से मध्य पूर्व में गैर–राज्य अभिनेताओं (Non-State Actors) की भूमिका ने इस संघर्ष को और अधिक जटिल बना दिया है।

इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य यह स्पष्ट संकेत देता है कि ईरान–अमेरिका संघर्ष को किसी एक सिद्धांत से पूरी तरह समझा नहीं जा सकता, बल्कि इसके लिए बहुआयामी और अंतःविषय (interdisciplinary) दृष्टिकोण की समझ आवश्यक है।

वर्तमान स्थिति (Current Situation : 2025–2026)

ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच वर्तमान संबंध अत्यधिक तनावपूर्ण, अनिश्चित और बहुस्तरीय संघर्ष की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं। यह संघर्ष अब पारंपरिक युद्ध के बजाय अप्रत्यक्ष, तकनीकी और रणनीतिक रूपों में विकसित हो चुका है, जिसे "हाइब्रिड संघर्ष" के रूप में देखा जा सकता है।[5]

1. परमाणु मुद्दे की तीव्रता :

वर्तमान समय में ईरान ने यूरेनियम संवर्धन के स्तर को काफी बढ़ा दिया है, जो परमाणु हथियार निर्माण की सीमा के निकट माना जाता है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) की रिपोर्टों के अनुसार, यह स्थिति वैश्विक सुरक्षा के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। JCPOA समझौता लगभग निष्क्रिय हो चुका है और उसे पुनर्जीवित करने के प्रयास अभी तक सफल नहीं हो पाए हैं।

2. आर्थिक प्रतिबंध और उनका प्रभाव :

अमेरिका द्वारा लगाए गए कठोर आर्थिक प्रतिबंध अभी भी ईरान की अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। हालांकि, ईरान ने चीन और रूस के साथ व्यापारिक और सामरिक संबंधों को मजबूत कर इन प्रतिबंधों के प्रभाव को आंशिक रूप से संतुलित करने का प्रयास किया है।[6]

3. प्रॉक्सी संघर्षों में वृद्धि :

मध्य पूर्व में ईरान और अमेरिका के बीच अप्रत्यक्ष संघर्ष लगातार बढ़ रहे हैं –

- इराक और सीरिया में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले।
- यमन में हूती विद्रोहियों की गतिविधियाँ।
- लेबनान में हिज्बुल्लाह की भूमिका।

इन घटनाओं से यह स्पष्ट होता है कि दोनों देश सीधे युद्ध से बचते हुए भी एक–दूसरे के विरुद्ध सक्रिय हैं।

4. इजराइल–ईरान तनाव और अमेरिकी भूमिका :

इजराइल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव ने इस संघर्ष को और जटिल बना दिया है। अमेरिका, इजराइल का प्रमुख सहयोगी होने के कारण, इस क्षेत्रीय टकराव में अप्रत्यक्ष रूप से शामिल हो जाता है।

5. रेड सी और समुद्री सुरक्षा संकट :

रेड सी क्षेत्र में जहाजों पर हमले और समुद्री मार्गों की असुरक्षा ने वैश्विक व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित किया है। अमेरिका और उसके सहयोगी इस क्षेत्र में सैन्य उपस्थिति बढ़ा रहे हैं, जिससे तनाव और बढ़ रहा है।

6. साइबर और ड्रोन युद्ध :

वर्तमान संघर्ष में साइबर हमले, ड्रोन स्ट्राइक और आधुनिक तकनीकों का व्यापक उपयोग हो रहा है। यह पारंपरिक युद्ध की तुलना में अधिक जटिल और अप्रत्याशित खतरे उत्पन्न करता है।[8]

7. वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन :

चीन और रूस के साथ ईरान के बढ़ते संबंध, तथा अमेरिका की बदलती वैश्विक रणनीतियाँ, इस संघर्ष को एक व्यापक भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में परिवर्तित कर रही हैं। यह स्थिति बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उभार को भी दर्शाती है।

मुख्य चुनौतियाँ (Major Challenges)

ईरान–अमेरिका संघर्ष के समाधान में कई संरचनात्मक और रणनीतिक बाधाएँ मौजूद हैं, जो इसे और अधिक जटिल बनाती हैं[9]

1. पारस्परिक अविश्वास (Mutual Distrust)

दोनों देशों के बीच दशकों से चला आ रहा अविश्वास किसी भी कूटनीतिक पहल को कमजोर कर देता है। 2018 में अमेरिका द्वारा JCPOA से हटना इस अविश्वास को और गहरा करता है।

2. परमाणु कार्यक्रम पर असहमति :

ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को शांतिपूर्ण बताता है, जबकि अमेरिका और उसके सहयोगी इसे सैन्य खतरे के रूप में देखते हैं। यह मूल विवाद का केंद्र है।

3. क्षेत्रीय शक्ति प्रतिस्पर्धा :

मध्य पूर्व में प्रभुत्व स्थापित करने की प्रतिस्पर्धा 'विशेषकर सऊदी अरब और इजराइल के संदर्भ में' इस संघर्ष को और जटिल बनाती है।

4. प्रॉक्सी युद्ध और गैर–राज्य अभिनेता :

हिज्बुल्लाह, हूती विद्रोही और अन्य समूहों की भूमिका ने संघर्ष को अप्रत्यक्ष और लंबे समय तक चलने वाला बना दिया है।

5. वैश्विक राजनीति का प्रभाव :

चीन और रूस के साथ ईरान के बढ़ते संबंध तथा अमेरिका की वैश्विक रणनीतियाँ इस संघर्ष को बहुध्रुवीय शक्ति प्रतिस्पर्धा से जोड़ देती हैं।

भविष्य की संभावनाएँ (Future Prospects)[10]

ईरान–अमेरिका संबंधों का भविष्य कई संभावित परिदृश्यों पर निर्भर करता है –

1. कूटनीतिक समाधान (Diplomatic Resolution)

यदि दोनों देश वार्ता के माध्यम से JCPOA जैसे समझौतों को पुनर्जीवित करते हैं, तो तनाव में कमी आ सकती है। यह सबसे सकारात्मक परिदृश्य है।[11]

2. यथास्थिति (Status Quo)

वर्तमान स्थिति बनी रह सकती है, जहाँ प्रत्यक्ष युद्ध नहीं होगा, लेकिन प्रॉक्सी संघर्ष, प्रतिबंध और तनाव जारी रहेंगे।

3. संघर्ष की तीव्रता में वृद्धि (Escalation)

यदि किसी बड़े सैन्य या राजनीतिक घटना (जैसे इजराइल–ईरान सीधा टकराव) होती है, तो यह संघर्ष व्यापक युद्ध में बदल सकता है।

4. क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में बदलाव :

चीन और रूस की भूमिका बढ़ने से अमेरिका का प्रभाव कम हो सकता है, जिससे नए प्रकार का शक्ति संतुलन विकसित होगा।

सुझाव (Suggestions)

ईरान–अमेरिका संघर्ष की जटिलता को देखते हुए इसके समाधान के लिए बहुआयामी और संतुलित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। निम्नलिखित सुझाव इस दिशा में महत्वपूर्ण हो सकते हैं[12]

1. कूटनीतिक संवाद का पुनरारंभ –

दोनों देशों के बीच प्रत्यक्ष एवं सतत कूटनीतिक वार्ता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बैक–चैनल डिप्लोमेसी (Back-channel diplomacy) और तटस्थ मध्यस्थों की भूमिका भी इस प्रक्रिया को आगे बढ़ा सकती है।

2. JCPOA का पुनर्गठन एवं पुनर्सक्रियकरण :

परमाणु समझौते को वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप संशोधित कर पुनः लागू किया जाना चाहिए, जिससे परमाणु प्रसार के खतरे को कम किया जा सके।

3. विश्वास निर्माण उपाय (Confidence Building Measures - CBMs)

दोनों देशों के बीच पारदर्शिता बढ़ाने, सैन्य गतिविधियों को सीमित करने और गलतफहमियों को कम करने के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

4. प्रॉक्सी युद्धों में कमी –

मध्य पूर्व में गैर–राज्य अभिनेताओं के माध्यम से चल रहे अप्रत्यक्ष संघर्षों को नियंत्रित करने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है।

5. क्षेत्रीय सुरक्षा ढाँचे का विकास – मध्य पूर्व के देशों को शामिल करते हुए एक समावेशी और बहुपक्षीय सुरक्षा तंत्र विकसित किया जाना चाहिए, जिससे स्थायी शांति स्थापित हो सके।

6. आर्थिक प्रतिबंधों में संतुलन –

प्रतिबंधों को इस प्रकार लागू किया जाना चाहिए कि वे राजनीतिक दबाव का साधन बने रहें, लेकिन आम नागरिकों पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव न डालें।

7. अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका को सुदृढ़ करना :

संयुक्त राष्ट्र, IAEA और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों को अधिक प्रभावी और निष्पक्ष भूमिका निभाने के लिए सशक्त किया जाना चाहिए।

8. ट्रैक-कूटनीति –

शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर संवाद को बढ़ावा देकर दोनों देशों के बीच वैचारिक दूरी को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion) –

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ईरान–अमेरिका संघर्ष समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक जटिल, बहुआयामी और दीर्घकालिक विवाद है, जिसकी जड़ें ऐतिहासिक, वैचारिक और सामरिक कारकों में निहित हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य (2025–2026) में यह संघर्ष पारंपरिक युद्ध के स्वरूप से आगे बढ़कर "हाइब्रिड संघर्ष" का रूप ले चुका है, जिसमें प्रत्यक्ष सैन्य टकराव के स्थान पर प्रॉक्सी युद्ध, आर्थिक प्रतिबंध, साइबर हमले और कूटनीतिक दबाव प्रमुख साधन बन गए हैं। वर्तमान स्थिति यह दर्शाती है कि यद्यपि ईरान और अमेरिका के बीच प्रत्यक्ष युद्ध नहीं हो रहा है, फिर भी मध्य पूर्व में इराक, सीरिया, यमन और लेबनान जैसे क्षेत्रों में अप्रत्यक्ष टकराव लगातार जारी है। विशेष रूप से रेड सी संकट, इजराइल–ईरान तनाव, तथा अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले इस संघर्ष को और अधिक संवेदनशील एवं अस्थिर बना रहे हैं। इसके साथ ही, ईरान के परमाणु कार्यक्रम में प्रगति और JCPOA का कमजोर होना वैश्विक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, चीन और रूस जैसे देशों के साथ ईरान के बढ़ते संबंध तथा अमेरिका की बदलती वैश्विक रणनीतियाँ इस संघर्ष को एक व्यापक भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में परिवर्तित कर रही हैं। इस प्रकार, यह संघर्ष केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक बन चुका है।

अतः वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि ईरान–अमेरिका संबंध "न युद्ध, न शांति" (No War, No Peace) की स्थिति में हैं, जहाँ प्रत्यक्ष युद्ध की संभावना सीमित है, किन्तु तनाव, प्रतिस्पर्धा और अप्रत्यक्ष संघर्ष निरंतर बने हुए हैं। अंततः, इस जटिल स्थिति के समाधान के लिए कूटनीतिक संवाद, बहुपक्षीय सहयोग, और विश्वास निर्माण उपायों को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है, ताकि क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक शांति सुनिश्चित की जा सके।

संदर्भ सूची (References)

1. Waltz, K. N. (1979). Theory of International Politics. Reading, MA: Addison-Wesley.
2. Mearsheimer, J. J. (2001). The Tragedy of Great Power Politics. New York: W.W. Norton & Company.
3. Wendt, A. (1999). Social Theory of International Politics. Cambridge: Cambridge University Press.

4. United Nations. (1995). Treaty on the Non-Proliferation of Nuclear Weapons (NPT). New York: United Nations.
5. International Atomic Energy Agency (IAEA). (2023–2025). Reports on Iran's Nuclear Programme. Vienna: IAEA.
6. U.S. Department of State. (2024–2026). Iran Sanctions and Policy Reports. Washington, D.C.
7. European Union. (2015). Joint Comprehensive Plan of Action (JCPOA). Brussels: European Commission.
8. Al Jazeera. (2024–2026). Reports on Iran–U.S. tensions and Middle East conflicts.
9. BBC News. (2024–2026). Coverage of Iran nuclear issue and regional conflicts.
10. Reuters. (2024–2026). International news reports on Iran–U.S. relations.
11. Cordesman, A. H. (2020). Iran and the Changing Military Balance in the Middle East. Washington, D.C.: CSIS.
12. Takeyh, R. (2011). Guardians of the Revolution: Iran and the World in the Age of the Ayatollahs. Oxford: Oxford University Press.